ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–64
दिनांकः शुक्रवार, 21 अगस्त, 2026

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 33.0 एवं 25.0 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 91 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 83 प्रतिशत, हवा की औसत गति 10. 7 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 3.3 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 4.2 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 31.0 एवं दोपहर में 36.0 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि मौसम शुष्क रहा है।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(22–26 अगस्त, 2026)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 22 से 26 अगस्त, 2026 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान अवधि के दौरान कहीं–कहीं हल्की वर्षा हो सकती है। हालांकि, बेगूसराय, समस्तीपुर, गोपालगंज, सीवान, वैशाली, पूर्वी चंपारण एवं पश्चिमी चंपारण जैसे जिलों में कुछ स्थानों पर 25–26 अगस्त के आसपास गरज–चमक के साथ मध्यम से भारी वर्षा होने का अनुमान है। इस अवधि में कुल 45–65 मि0मी0 वर्षा हो सकती है।
- इस दौरान अधिकतम तापमान 32–36°C तथा न्यूनतम तापमान 26–29°C के बीच रहने की संभावना है।
- सुबह के समय सापेक्ष आर्द्रता लगभग 85% तथा दोपहर में 50–55% के बीच रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमान अवधि में हवाएं मुख्यतः पूर्वी दिशा से 5–15 किमी प्रति घंटा की गति से चल सकती हैं।

समसामयिक सुझाव

- मक्काः वर्तमान मौसम तना छेदक एवं फॉल आर्मीवर्म कीटों के प्रकोप के लिए अनुकूल है। फसल की नियमित निगरानी करें। तना छेदक कीटों के नियंत्रण के लिए कार्बोफ्यूरान 3–जी, दवा का 7 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से पौधों के गाभा में प्रयोग करें। फॉल आर्मीवर्म से बचाव हेतु इमामेक्टिन बेंजोएट 0.5–0.6 ग्राम दवा का प्रति 15 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। आवश्यकता होने पर 7 दिन बाद कोराजेन दवा का 0.5–0.6 मिलीलीटर प्रति 15 लीटर पानी की दर से दूसरा छिड़काव करें।
- धानः अभी के समय में धान के खेतों में खरपतवार नियंत्रण के लिए विशेष ध्यान रखें। साथ ही साथ तना छेदक एवं पत्ती लपेटक कीटों की नियमित निगरानी करें। प्रकोप होने पर दोपहर के बाद क्लोरेंट्रानिलिप्रोल 4–जी दानेदार दवा @ 20–25 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें।
- परवलः किसानों को परवल की बुवाई करने की सलाह दी जाती है। उत्तर बिहार के लिए *राजेंद्र परवल–1*, *राजेंद्र परवल–2*, *राजेंद्र परवल–3*, *स्वर्ण रेखा*, *स्वर्ण अलौकिक* एवं *स्वर्ण सुरभि* किस्में उपयुक्त हैं। 150×100 सेमी की दूरी बनाए रखें। खेत की तैयारी के समय 20–25 टन अच्छी तरह सड़ी हुई गोबर की खाद प्रति हेक्टेयर की दर से डालें। फसल की उचित वृद्धि एवं विकास के लिए 60 किग्रा नत्रजन, 50 किग्रा फास्फोरस एवं 40 किग्रा पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें।
- बैंगनः तना एवं फल छेदक के प्रारंभिक प्रबंधन के लिए रोपाई के 10 दिन बाद फ्यूराडान 3–जी @ 1 ग्राम प्रति पौधा की दर से डालकर मिट्टी में मिला दें। खड़ी फसल में नियमित निगरानी करें तथा संक्रमित टहनियों एवं फलों को तोड़कर मिट्टी में गाड़ दें। अधिक प्रकोप होने पर स्पिनोसैड 48–ईसी @ 1 मिलीलीटर प्रति 4 लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।
- लीचीः लीची स्टिंक बग के प्रबंधन के लिए निचले तने के चारों ओर चिपचिपे गोंद वाले बैंड लगाकर ट्रंक बैरियर तैयार करें, ताकि ऊपर चढ़ने वाले निम्फ पेड़ की उपरी भागों तक न पहुँच सकें। जमीन पर गिरे वयस्क एवं निम्फ को नियमित रूप से एकत्र कर नष्ट करें। सभी लीची बागों में इन उपायों को अपनाएं, ताकि कीट का प्रकोप बढ़ने और आसपास के बागों में फैलने से रोका जा सके।
- कद्दूवर्गीय फसलेंः कद्दूवर्गीय फसलों में फल मक्खी के प्रकोप की नियमित निगरानी करें। कीट की प्रभावी निगरानी एवं प्रबंधन के लिए मिथाइल यूजेनॉल ट्रैप लगाएं। प्रकोप दिखाई देने पर साफ मौसम में इमिडाक्लोप्रिड 30.5–एससी @ 0.25 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।
- फलदार पौधेः वर्तमान समय उपलब्ध मिट्टी की नमी का उपयोग करते हुए आम, लीची, कटहल, अमरूद, जामुन, सीताफल एवं नींबू जैसे फलदार पौधों के रोपण के लिए अनुकूल है। किसानों को अधिकृत नर्सरियों से स्वस्थ एवं रोगमुक्त पौध सामग्री प्राप्त करने की सलाह दी जाती है। रोपण से पहले प्रत्येक गड्ढे में 40–50 किग्रा अच्छी तरह सड़ी हुई गोबर की खाद डालकर मिट्टी में अच्छी तरह मिला दें, ताकि पौधों की बेहतर स्थापना एवं प्रारंभिक वृद्धि सुनिश्चित हो सके।
- पशुधनः वर्तमान समय में गाय एवं भैंसों में लंपी स्किन डिजीज के संक्रमण की संभावना है। इसके प्रमुख लक्षण तेज बुखार, शरीर पर गांठें बनना एवं बाद में उनके फूटने से घाव होना, लंगड़ापन, भोजन एवं पानी का सेवन कम होना तथा दुधारू पशुओं में दूध उत्पादन में कमी होना हैं। उपचार के लिए पशु चिकित्सक की सलाह से आवश्यक एंटी–इंफ्लेमेटरी, एंटीबायोटिक एवं इम्यूनोमॉडुलेटर दवाओं का प्रयोग करें। पशुशाला एवं पशुओं की नियमित सफाई, स्वच्छता बनाए रखना तथा संतुलित आहार देना आवश्यक है।

आज का अधिकतम तापमानः 34.0 डिग्री सेल्सियस, जो से 1.3 डिग्री सेल्सियस अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः 25.6 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.2 डिग्री सेल्सियस कम

(डॉ0 ए. सत्तार)
वरीय वैज्ञानिक सह नोडल पदाधिकारी